ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

वैदिककालीन नारी- वर्तमान सन्दर्भ में
Vedic Women - In The Present Context

Paper Submission: 12/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12//2021

आराधना वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
के0 प्र0 मि0 राजकीय महिला महाविद्यालय,
औराई, भदोही, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वैदिक कालीन- साहित्य से ज्ञात होता है, कि उस समय समाज में नारियों की स्थिति प्रत्येक दृष्टि से सुदृढ़ थी । सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक विविध क्षेत्रों में उनकी पुरुषों के समान ही सहभागिता थी । ज्ञान - विज्ञान के क्षेत्र में भी नारियाँ अग्रणी थी । पुत्र और पुत्री में भेद - भाव की स्थिति नहीं थी । स्त्री-जाति को भी अपने जीवन को उन्नति की ओर अग्रसर करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था । इसी परिप्रेक्ष्य में आज आवश्यकता है, कि वैदिक -साहित्य के प्रचार - प्रसार के माध्यम से समाज में नारि -जाति के प्रति सम्मान को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया जाय । यद्यपि वर्तमान समय में नारी को अधिकार तो बहुत प्राप्त है, किन्तु सम्मान और सुरक्षा की आवश्यकता अभी भी बनी हुई है। इसके लिये अपनी प्राचीन संस्कृतियों और मूल्यों से अवगत होना आवश्यक है।

It is known from Vedic period literature that at that time the position of women in the society was strong in every respect. They had equal participation as men in various fields of social, political, economic, religious. Women were also the leaders in the field of knowledge and science. There was no distinction between sons and sons. Women and caste also had full right to lead their life towards progress.Women and caste also had full right to lead their life towards progress. In this context, today it is necessary that through the propagation of Vedic literature, efforts should be made to restore the respect for women in the society. Although women have got a lot of rights in the present time, but the need for respect and protection still remains. For this it is necessary to be aware of our ancient cultures and values.

मुख्य शब्द: संस्कृति, उपेक्षा, अग्रसर, वैदुष्य, सन्तान, लिंगभेद, भ्रूणहत्या ।
keywords: Culture, Neglect, Advance, Vaidusya, Progeny, Sex Discrimination, Feticide.

प्रस्तावना

वैदिक काल में नारी जाति को प्रतिष्ठित एवं सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वर्तमान काल में यद्यपि नारी-जाति को कानून की दृष्टि से अनेक अधिकार प्राप्त हैं, फिर भी वह समाज में सम्मान और समानता को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल नहीं हो पा रही है। निरन्तर समाज में स्त्रियों की उपेक्षा एवं शोषण का क्रम जारी है, लेकिन वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है, कि तत्कालीन समाज में नारी हर दृष्टि से हर क्षेत्र में सशक्त थी । श्री राम जी उपाध्याय अपनी पुस्तक "प्राचीन भारत की सामाजिक संस्कृति "में लिखते है, ‘‘इसमें कोई सन्देह नहीं कि वैदिक आर्यो की बीच नारी की स्थिति इतनी ऊँची थी, कि वर्तमान में संसार का अधिक से अधिक सुसंस्कृत राष्ट्र भी यह दावा नहीं कर सकता, कि उसने नारी को इतना ऊँचा स्थान प्रदान किया हैं ‘‘ यही कारण है कि प्रसिद्व साहित्यकार डॉ0 सम्पूर्णानन्द जी ने ‘‘ वेदों की महत्ता’’ में लिखा है - ..... वेदों का स्वाध्याय हमारे लिये न केवल अत्यावश्यक ही है, परन्तु यह कितनी दुःखद स्थिति है ,कि वेदों के अनुपम अथाह ज्ञान की वर्तमान काल में किस प्रकार उपेक्षा की जा रही है। मुझे तो ऐसा अनुभव होता है कि महान वेद- ज्ञान को मिटाने में अनेक (षड्यंत्रकारी) शक्तियों का हाथ है। ’’[2]

वेदों, शास्त्रों और धर्मग्रन्थों की ऐसी व्याख्याओं को प्रस्तुत किया गया , जो लिंग- भेद तथा पूर्वाग्रहों से प्रेरित थी । वेदों को नारी -विरोधी बताने का यह क्रम आज भी जारी है। एक तरफ तो वेदों को नारी विरोधी बताया जाता है, दूसरी तरफ नारी जाति के प्रति उपेक्षा, तिरस्कार और शोषण में वृद्वि हो रही है। यदि वेदों का गहन अध्ययन किया जाय, तो यह निश्चित रुप से स्पष्ट हो जायेगा, कि वेदों में नारी की अवहेलना कभी नहीं की गयी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी का विशिष्ट स्थान था । वैदिक काल में नारी जाति की स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ थी । वैदिक कालीन नारी प्रत्येक दृष्टि से उन्नति कें मार्ग पर अग्रसर थी। नारी को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक सभी क्षेत्रों में अपनै विकास की स्वतंत्रता थी।

वैदिक मंत्रो के द्रष्टा केवल ऋषि ही नहीं थे, अपितु अनेक ऋषिकाओं का वर्चस्व भी स्थापित था। अनेक विदुषी नारियों जैसे- गार्गी, मैत्रेयी, कात्यायनी, अरुंधती, अपाला, घोषा आदि का पाण्डित्य एवं वैदुष्य पर आधिपत्य था । नारी- जाति को पुरुषों के समान ही धार्मिक कृत्यों में भाग लेने का अधिकार था । पत्नी के बिना पति यज्ञ का अधिकारी नहीं था ।

‘अयज्ञो वा एष योडपत्नीकः’।[3]

यज्ञ ही नहीं अपितु स्त्री के यज्ञोपवीत धारण करने का भी वर्णन अथर्ववेद में प्राप्त है।

" शुद्धाः पूता योषिता यज्ञिया इमाः।"
नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था -

'मूर्धासि राड् ध्रुवासि धरुणा धर्त्र्यसि धरणी'।
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्टौ त्वा क्षेमाय त्वा ॥[5]
अर्थात् हे स्त्रीतू उच्च स्थान पर स्थित सूर्य के तेज से युक्त, ध्रुव के समान स्थिर, सबकी पोषक तथा पृथिवी के समान गृहस्थी को धारण करने वाली है।"

वैदिक कालीन स्त्री ज्ञानवती थी । वह यज्ञ के रहस्यों से भली भाँति परिचित थी।6 वैदिक काल में स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। एक स्थल पर एक शिक्षित स्त्री अन्य स्त्रियों को शिक्षा देती हुई सम्बोधित करती है, कि 'हे स्त्रियों जिस प्रकार मैं सुशिक्षित हुई, वाणियों को प्रेरणा देने वाली, शुद्ध बुद्धियों को अच्छी प्रकार ज्ञापन करती हुई उत्तम विज्ञान से युक्त हूँ ,यज्ञ को धारण करती हूँ, वैसे ही तुमको भी यह यज्ञ धारण करना चाहिए -
'चोदयित्री सुनृतानां चेतन्ती समतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती।'
वेदों में कन्या कें जन्म को कभी भी अभिशाप नहीं माना गया है। वेद में पुत्र के जन्म के साथ ही पुत्री के जन्म की भी कामना की गयी हैं, क्योंकि वेदों में अनेक बार पुत्र या पुत्री के लिये सन्तान सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया है और इन शब्दों के बारे में निघण्टु में स्पष्ट रुपेण अपत्यवाची (सन्तान) शब्दों का उल्लेख किया गया है।7 'अपत्य' शब्द से पुत्र अथवा पुत्री दोनों अर्थो को लिया जाता है। ऋग्वेद में उल्लिखित है-

'मम पुत्राः शुत्रुहणोडथो मे दुहिता विराट्।[8]
अर्थात् मेरे पुत्र शत्रुहंता हो और पुत्री भी विशेष रुप से तेजस्विनी हो । इसी प्रकार एक अन्य स्थल पर वर्णित हैं

' पुत्रिणा वा कुमारिणा विश्वमायुर्व्यश्नुतः"[9]
अर्थात् यज्ञ करने वाले पति-पत्नी और कुमारियों वाले होते है। एक स्थल पर तो पूषा परमेश्वर से स्पष्ट रुप से कन्या प्रदान करने के लिये प्रार्थना की गयी है।[10] अथर्ववेद में वर्णित है - 'यथा यशः कन्यायाम्' अर्थात जैसा यश कन्याओं में होता है, वैसा यश हमें प्राप्त हो।[11]

वैदिक साहित्य से ज्ञात होता है, कि उस समय विधवा विवाह की भी व्यवस्था थी। यदि कोई स्त्री पुनर्विवाह करना चाहे तो इसमें आपत्ति नही थी -

'को वां शयुत्ता विधवेन देवरं मर्त्य न योषा कृणुते सधस्य आ।[12]
इसके विपरीत विधवा होने के पश्चात् यदि कोई स्त्री पुनर्विवाह नहीं करना चाहती है, तो सम्पत्ति और संतान पर अधिकार प्राप्त करते हुए ससुराल में रह सकती थी।[13]

राजनीतिक क्षेत्र में भी स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त था । स्त्रियॉ नगर के प्रबन्ध समितियों की सदस्य होती थी और राज्य की व्यवस्था एवं विभिन्न कार्यो में उनका सहयोग होता था

अहं वदामि नेत्तवं सभायामह त्वं वद'।
सत्याय च तपसे देवताभ्यो निधिं शेवधिं परिदध्य एतम्।
अव गान्मा समित्यां ।[14]
आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति ने अपनी पुस्तक 'वेदों के राजीनतिक सिद्धान्त[15] में लिखा हैं- " वेदों में स्त्री के लिये बहुत स्थानों पर 'पुरंधिः इस नाम का प्रयोग हुआ है, इसका शब्दार्थ है- पुरं नगर दधातीति पुरंधिः अर्थात् जो नगर की रक्षा और पोषण करें । स्त्रियों के लिये प्रयुक्त होने वाले इस नाम से यह सूचित होता है, कि नगरों के प्रबन्ध का, उनकी आन्तरिक रक्षा और सफाई आदि का काम स्त्रियों के हाथ में रहना चाहिए । आजकल की प्रचलित भाषा में कहना हो, तो स्त्रियों के इस पुरंधि नाम से यह सूचित होता है, कि नगरों के प्रबन्ध के लिये म्यूनिसिपैन्लिटयाँ (नगर सभाएँ) होनी चाहिए और उनमें स्त्रियों का बड़ा हाथ होना चाहिए।"राजा के समान ही रानी को भी राजीतिक विद्या में निपुण होना चाहिए।[16] साथ ही प्रजापालन में जिस प्रकार राजा न्याय के आसन पर बैठकर न्याय करता है, उसी प्रकार स्त्रियों से सम्बन्धित न्याय का कार्य रानी को करना चाहिए।[17] राजनीतिक विद्या, नीति विद्या, न्याय विद्या के साथ ही युद्ध विद्या का भी स्त्रियों को अच्छा ज्ञान था । स्त्रियाँ अश्वों के संचालन तथा युद्ध की व्यावहारिक बारीकियों में भली -भाँति परिचित थी।[18] इसी प्रकार एक स्थल पर स्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि 'तू दूर जाकर, शत्रुओं को मारकर उन पर विजय प्राप्त कर।[19]

अध्ययन का उद्देश्य

समाज ने नारी को समानता का स्थान प्राप्त हो। लिंगभेद समाप्त हो। स्त्री-पुरुष के भेद से परे मानवीय दृष्टिकोण से नारी के अस्तित्व को स्वीकार किया जाय। इसके साथ ही सम्मान के साथ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने का समान अवसर प्राप्त हो ।

निष्कर्ष

इस प्रकार वैदिक साहित्य में परिलक्षित नारी के विविध रुपों से स्पष्ट है, कि वैदिक काल में लिंगभेद नहीं था । वर्तमान काल में जब कन्या भ्रूण हत्याओं ने समाज के सन्तुलन को बिगाड़ना शुरु कर दिया है, तो आवश्यक हो जाता है, कि वैदिक साहित्य में वर्णित नारी समाज की उपयोगिता को समझा जाय और समाज में उसका प्रचार-प्रसार कर नारी के विलुप्त हो गये सम्मान को पुनः स्थापित किया जाए, जिससे परिवार, समाज और राष्ट्र सभी का उत्थान हो सके।

सन्दर्भ सूची

1. *प्राचीन भारत की सामाजिक संस्कृति, पृ0 77*
2. *हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति का अस्तित्व, पृ0 1*
3. *तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/3/31*
4. *अथर्ववेद 6/22/5*
5. *यजुर्वेद 14/21*
   चतुष्कर्पदा युवतिः सुदेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्त्रे ।
6. *तस्यां सुवर्णा वृषणां निषेदतुर्यत्र देवा दधिरे भागदेयम्।*
   (ऋग्वेद) 10/114/3
7. *तुक्। तोकम्। तनयः। तोक्म। तक्म। शेषः । अप्नस्। गयः। जाः । अपत्यम् । यदुः। सूनुः। नपात्। प्रजा। बीजम्। इति पं ंचदश अपत्य नामानि।' निघण्टु 2/2*
8. *ऋग्वेद 10/159/3*
9. *ऋग्वेद 8/31/8*
10. *अविता नो अजाश्वः पूषा यामनि-यामनि।*
11. *आवक्षत् कन्यासु नः। ऋग्वेद 9/67/10*
    अथर्ववेद 10/3/20
12. *ऋ 10/40/2*
13. *इयंनारी पतिलोकं वृणानां, निपद्यत उप त्वा मर्त्य प्रेतम्।*
    धर्म-पुराणम् अनुपालयन्ती, तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ॥
    अथर्व0 18/3/1
14. *अथर्व0 7/38/4,12/3/46*
15. *वेदों के राजनीतिक सिद्वान्त, पृ0 203*
16. *यादृशी राजनीति- विद्यां राजाधीतवान् भवेत्*
    तादृशीमेव राज्यप्यधीतवती स्यात्। - यजुर्वेद 13/16
17. *यथा सम्राट साम्राज्यं पालयितुं न्यायासने स्थित्वा पुरुषाणां राजपत्नी स्त्रीणां नित्य न्यायं कुर्यात् । यजु 10/26*
18. *यथा राजा राजपुरुषाश्च यानाश्वचालन युद्धव्यवहारान् ..... विजानन्तु । यजुर्वेद 29/50*
19. *यजुर्वेद 17/45*